"कुकुरमुत्ता" – निराला

अबे सुन बे गुलाब
भूल मत जो पाई खुशबू रंगोआब
खून चूसा खाद का तू ने अशिष्ट
डाल पर इतराता है कैपीटलिस्ट
कितनों को तू ने बनाया है गुलाम
माली कर रक्खा सहाया जाड़ा घाम
हाथ जिसके तू लगा
पैर सर रखकर व पीछे को भगा
औरत की जानिब मैदान यह छोड़कर
तबेले को टट्टू जैसे तोड़कर
शाहों राजों अमीरों का रहा प्यारा
तभी साधारणों से तू रहा न्यारा
वरना क्या तेरी हस्ती है पोच तू
काटे ही से भरा है यह सोच तू
कली जो चटकी अभी
सूखकर काँटा हुई होती कभी
रोज पड़ता रहा पानी
तू हरामी खानदानी ।

एक थे नव्वाब
फारस से मँगाये थे गुलाब
बड़ी बारी में लगाये
देशी पौधे भी उगाये
रखे माली कई नौकर
गजनवी का बाग मनहर
लग रहा था
एक सपना जग रहा था

बलराम कुमार

"कुकुरमुत्ता"

साँस पर तहजीब की
गोद पर तरतीब की।
क्यारियां सुन्दर बनी
चमक में फैली घनी
फूलों के पौधे कहां
लग रहे थे खुशनुमा।

Hindi Privias.

प्रस्तुत कविता साम्राज्यवादी एवं पूँजीवाद सोच एवं व्यवस्था के प्रति एक जिहाद है। यहां कुकुरमुत्ता साधारण जनता के लिए आया है। मजदूरों के लिए आया है। कविता में गुलाब पूँजीपति एवं सामंती वर्ग का समर्थन करता है। कुकुरमुत्ता स्वयं जन्म लेता है, पलता है, बढ़ता है, खिलता है, ठीक इसके विपरीत गुलाब के देख भाल के लिए माली की व्यवस्था की जाती है। खादपानी की व्यवस्था की जाती है।

बलराम कुमार

पारस – ईश्वर
फालसा – फल होता है
गुलाब – बसंत मौसम में खिलता है।
आब – सुन्दरता, रौनक
कैपिटलिस्ट – पूंजीपति
न्यारा – सुन्दर
भोग में जो नहीं रमे – वह अनाशक्त है।
— सभी प्रलोभन के बावजूद भी अगर नहीं रमे वही अनाशक्त है।
विभूति – दौलत
नंदन कानन – स्वर्ग का बगीचा।

ब्लाउज़ कुमार

"अवध को अपनाकर ...